بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 12.08.16 बैतुल फ़तूह लंदन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत-ए-अहमदिया बर्तानिया का जलसा सालाना आरम्भ हो रहा है, इन्शाअल्लाह। शाम को यथावत् उद्घाटन समारोह होगा। अल्लाह तआला समस्त सम्मिलित होने वालों को उन अपेक्षाओं के अनुसार पूरा उतरने वाला बनाए जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे में उपस्थित होने वालों से की हैं तथा समस्त शामिल होने वालों को उन दुआओं का उत्तराधिकारी बनाए जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसे में शामिल होने वालों के लिए की हैं। यह तो प्रत्येक अहमदी जानता है और उसे ज्ञान होना चाहिए तथा इस बात का विशेष रूप से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाया है कि जलसे में उपस्थिति किसी दुनया के मेले जैसी उपस्थिति नहीं है इस लिए प्रत्येक शामिल होने वाले को इन दिनों में अपने ध्यान का केन्द्र दीन के ज्ञान वर्धन तथा रूहानी उन्नति को बनाना चाहिए बल्कि आप अलैहिस्सलाम ने उन लोगों के प्रति बड़ी अप्रसन्नता प्रकट की है जो इस सोच के साथ जलसे में शामिल नहीं होते।

अतः जलसे पर आने वालों को जलसे के प्रोग्रामों को ध्यान पूर्वक सुनने के लिए सुनिश्चित करना चाहिए। एक कमैटी भाषणों के शीर्षक निश्चित करके मुझे भेजती है जिनमें से सात आठ शीर्षक मैं निश्चित करता हूँ तथा इस प्रकार चयनित निबन्ध भाषण कर्ताओं को भिजवाए जाते हैं और वे कई दिन बल्कि कुछ तो एक महीने से अधिक का समय अपने भाषण की तय्यारी में लगाते हैं और इस सीमित समय में बड़े परिश्रम से इन शीर्षकों के अनुसार निबन्ध पेश करने का प्रयास करते हैं। अतः प्रत्येक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भाषण कर्ता तथा उलेमा इतना समय लगाकर मेहनत करके जो सामग्री तय्यार करते हैं, उसे ध्यान पूर्वक सुनें और फिर याद भी रक्खें। मैं समझता हूँ कि यदि सुनने वाले पुरुष भी तथा स्त्रियाँ भी इन भाषणों का पचास प्रतिशत भी याद रक्खें तो अपने दीनी, इलमी और रूहानी स्तर को कई गुणा बढ़ा सकते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि सबको ध्यान पूर्वक सुनना चाहिए। फ़रमाया कि पूरे ध्यान एव्म एकाग्रता के साथ सुनो, क्यूँकि यह मामला ईमान का है इसमें सुस्ती, विमुखता और असावधानी बहुत बुरे परिणाम उत्पन्न करती है। जो लोग ईमान में असावधानी

से काम लेते हैं और जब उनको सम्बोधित करके कुछ बयान किया जाए तो ध्यान पूर्वक उसको नहीं सुनते, उनको बोलने वाले के बयान से, चाहे वह कितना ही उत्तम, लाभकारी तथा प्रभावकारी क्यूँ न हो, कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं होता। फ़रमाया- ऐसे ही लोगों के विषय में कहा जाता है कि वे कान रखते हैं परन्तु सुनते नहीं, और दिल रखते हैं पर समझते नहीं। अतः याद रक्खो कि जो कुछ बयान किया जाए उसे ध्यान मग्न होकर तथा बड़े चिन्तन के साथ सुनो क्यूँकि जो ध्यान पूर्वक नहीं सुनता वह चाहे लम्बे समय तक लाभकारी अस्तित्व के सम्पर्क में रहे, उसे कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं हो सकता।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- जलसे की कार्य-वाही को बड़ी गम्भीरता से सुनें तथा इस धारणा के साथ सुनें कि उसके द्वारा हमें केवल आनन्द नहीं उठाना अथवा किसी ज्ञान सम्बंधी विषय को सुनकर अस्थाई आनन्द नहीं उठाना बल्कि इस लिए सुनना है कि हमें सदैव इलमी और रूहानी लाभ प्राप्त हो।

अल्लाह तआला ने हम पर उपकार किया कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना। इस उपकार का हक़ उसी अवस्था में अदा कर सकते हैं जब हम विशुद्ध होकर केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए हर एक काम करने वाले हों। अतः जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें छोटी छोटी बातों का ध्यान दिलाते हैं तो इस लिए कि कुछ लोगों की कमज़ोरी की हालत अधिकांश लोगों की सोच न बन जाए। केवल कुछ लोगों को देखकर नई आने वाली पीढ़ियाँ यह न समझ लें कि जलसों में बैठकर बातें करना और ध्यान न देना जायज़ है। फ़रमाया- और यदि मैं इस संदर्भ में बात करता हूँ तो इस लिए कि स्मरण होता रहे और यदि कोई कमज़ोरी है तो साथ के साथ दूर होती चली जाए ताकि हमारे नए आने वाले, जैसा कि मैंने कहा, और हमारे बच्चे तथा हमारे युवा इस बात को सम्मुख रक्खें कि जलसे का क्या महत्त्व है। यदि जलसा हमारे ज्ञान और आध्यात्मिक प्रगति पर सकारात्मक रूप से प्रभाव पूर्ण नहीं हो रहा तथा मानव दुर्बलताओं के कारण हममें से कुछ भाषणों तथा भाषण कर्ताओं से लाभान्वित नहीं होते तो यह चिंता का विषय है। अल्लाह तआला सम्बोधन कर्ताओं की वाणियों में भी बरकत डाले कि वे अपने लिए निश्चित किए गए निबन्ध को सुनने वालों के मस्तिष्क में इस प्रकार डाल सकें कि वे बातें जो अल्लाह तआला और रसूल की बातें हैं, जो प्रेम और आज्ञापालन की बातें हैं, जो अल्लाह के साथ सम्बंध की बातें हैं, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत की बातें हैं, जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम तथा मेहदी मअहूद से सम्बंध तथा आज्ञा पालन की बातें हैं, लोगों के मस्तिष्क में प्रवेश कर जाएँ तथा सकारात्मक प्रभाव डालने वाली हों। अतः प्रत्येक वह व्यक्ति जो जलसे पर आया है इस बात को सुनिश्चित करे कि उसने इन तीन दिनों में दुनया के मामलों को भूल जाना है तथा अपने दीनी और रूहानी स्तरों को बढ़ाना है। अल्लाह तआला सबको इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अतिथियों की सेवा के लिए कार्यकर्ताओं के रूप में जिन्होंने जलसे के दिनों में अपने आपको पेश किया है उनमें कॉलिजों, स्कूलों और यूनिवर्सिटयों के विद्यार्थी भी हैं तथा एक बड़ी संख्या ऐसों की भी है जो अपने कारोबार करते हैं या नौकरियाँ करते हैं। उनमें से कुछ बड़े

उच्च पदों पर भी नियुक्त हैं परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा की जो भावना है उसने एक स्कूल के विद्यार्थी को, एक मज़दूर को, एक कारोबार करने वाले को, एक सम्मानित तथा सांसारिक दृष्टि से उच्च पद पर काम करने वाले को, एक ही स्तर पर खड़ा कर दिया है। इस लिए वे मेहमान जो कई बार कार्यकर्ताओं के साथ अनुचित व्यवहार दिखा जाते हैं उन्हें अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण रखना चाहिए तथा कारकुनों के स्वाभिमान का ध्यान रखना चाहिए। निःसन्देह कार्यकर्ताओं को यही निर्देश दिए जाते हैं कि उन्होंने प्रत्येक अवस्था में साहस एव्म धैर्य से काम लेना है परन्तु मानव दुर्बलता के कारण कई बार कुछ कार्यकर्ता कठोर भाषा भी बोल जाते हैं। अतः मेहमानों का भी काम है कि कारकुनों का आदर सम्मान करें तथा कोई ऐसा व्यवहार न करें जिसके कारण बुराई फैलने की सम्भावना हो। बच्चे और युवा एक विशेष भावना के साथ काम करने आते हैं तथा कई बार मेहमानों के अनुचित व्यवहार के कारण उनमें कुधारणा भी उत्पन्न हो जाती है। अहमदी जो जलसे में शामिल होने के लिए आते हैं निःसन्देह वे एक प्रकार से अतिथि हैं परन्तु उनका उद्देश्य मेहमान बनकर रहना नहीं होना चाहिए। वे तो इस लिए आते हैं कि जलसे की बरकतों से लाभान्वित हों इस लिए उनके विश्राम स्थल अथवा खाने इत्यादि के समय या पार्किंग में यदि कुछ कारणों से विलम्ब भी हो, तो खुले दिल से और साहस के साथ इस कठिनाई को सहन करना चाहिए। रबवा में जो जलसे होते थे अथवा क़ादियान में होते हैं तो सर्दियों में खुले में तथा कई बार बारिश में भी लोग जलसा सुनते हैं और ठंड भी सहन करते हैं। अतः यदि शामिल होने वालों को ऐसी छोटी मोटी कठिनाईयाँ सहनी पड़ती हैं तो सहन करनी चाहिएँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर ऐसे ही लोगों के बारे में फ़रमाया, जो विभिन्न चीज़ों की मांग करते हैं। फ़रमाया कि देखो यदि कोई मेहमान यहाँ केवल इस लिए आता है कि यहाँ आराम मिलेगा, ठंडे शर्बत मिलेंगे अथवा स्वादिष्ट खाने मिलेंगे तो मानो वह इन चीज़ों के लिए ही आता है जबकि स्वयं कारकुन का कर्त्तव्य होता है कि वह यथासम्भव उनकी मेहमानदारी में कोई कमी न करे तथा उसको आराम पहुंचावे और वह पहुंचाता है परन्तु मेहमान का स्वयं ऐसा विचार करना उसके लिए हानि कारक है। अतः मेहमान इन दिनों में जैसी भी सुविधा उलब्ध हो उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करें तथा उन कार्यकर्ताओं को धन्वाद दें जो अपने रात दिन एक करके प्रत्येक विभाग में आतिथ्य का हक़ अदा करने का प्रयास करते हैं। ये जलसे के तीन दिन, इस प्रयास में मेहमानों को रहना चाहिए कि हमने ख़ुदा तआला को प्रसन्न करने के किस प्रकार सामान करने हैं। अल्लाह तआला का फ़ज़्ल मांगते हुए ये दिन व्यतीत करें, उसकी ख़ैर मांगते हुए व्यतीत करें तथा प्रत्येक बुरे प्रभाव से अल्लाह तआला की शरण मांगते हुए ये दिन गुज़ारें।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति किसी स्थान पर निवास करते हुए अथवा अस्थाई पड़ाव डालते समय यह दुआ मांगे कि मैं अल्लाह तआला के सम्पूर्ण कलमों की शरण में आता हूँ तथा प्रत्येक बुराई से अल्लाह तआला की शरण चाहता हूँ तो फ़रमाया कि ऐसे व्यक्ति को उस निवास स्थान को छोड़ने या वहाँ से चले जाने तक कोई चीज़ हानि नहीं पहुंचाएगी। अतः प्रत्येक कठिनाई से बचने के लिए हमें दुआएँ मांगते रहना चाहिए और यह भी हर एक जानता है कि अल्लाह तआला ने

फ़रमाया है कि दुआओं की क़बूलियत के लिए इबादत का हक़ अदा करना भी अनिवार्य है। अल्लाह तआला के आदेशानुसार काम करना भी अनिवार्य है। अतः इन दिनों में इस दृष्टि से भी अपने जीवन को ढालें तथा केवल इन दिनों में ही नहीं बल्कि फिर यह जो आदत पड़े, प्रत्येक के जीवन का सदा के लिए अंश बन जाए।

जलसे में शामिल होने वाले इस बात का भी ध्यान रक्खें कि नमाज़ों के निश्चित समय पर आकर बैठ जाया करें ताकि बाद में आने के कारण शोर न हो और जो पहले आकर बैठ गए हैं वे दुआएँ और अल्लाह का ज़िक्र करते रहें, इसका भी सवाब है। अल्लाह तआला तो प्रत्येक छोटी से छोटी चीज़ का सवाब देता है, मस्जिद में बैठे रहने का भी एक सवाब है। अतः इस सवाब को भी नहीं छोड़ना चाहिए और यही इन तीन दिनों का उचित उपयोग भी है बजाए इसके कि बाहर खड़े इधर उधर की बातों में वयस्त हों और जब मैं आ जाऊँ और नमाज़ शुरु हो जाए तो फिर उसके बाद अन्दर आना शुरु हों। तो जैसा कि मैंने कहा इस समय फिर लकड़ी के फ़र्श के कारण, इस पर जो नमाज़ी नमाज़ पढ़ रहे होते हैं उनकी नमाज़ बाधित होती है। इसी प्रकार नमाज़ों के समय तथा जलसे के चलते समय अपने फ़ोन बन्द कर लिया करें या कम से कम घन्टी की आवाज़ बन्द कर लिया करें।

इसी प्रकार शामिल होने वालों को जो अपनी कारों के द्वारा आ रहे हैं इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि ट्रांसपोर्ट के विभाग को अपना पूरा सहयोग दें ताकि प्रबन्धकों को किसी प्रकार की कठिनाई न हो। किसी भी प्रबन्धन में सरलता के लिए जलसे पर आने वालों का सहयोग आवश्यक है। स्कैनिंग के विभाग के साथ सम्पूर्ण सहयोग करें। ये समस्त व्यवस्थाएँ शामिल होने वालों की सुविधा तथा सुरक्षा के लिए की जाती हैं। अहमदिया जमाअत की सुन्दरता यही है कि प्रत्येक अहमदी प्रबन्ध का अंश है चाहे वह कारकुन है अथवा साधारण व्यक्ति जो जलसे में शामिल होने के लिए आया है। अतः विशेष रूप से पार्किंग, स्कैनिंग, जलपान-ग्रह, जलसा-ग्रह, इनमें हर समय प्रत्येक को सावधान एंव सचेत रहने की आवश्यकता है। आस पास नज़र रखने की आवश्यकता है। जहाँ भी कोई अनोखी बात देखें अथवा किसी की अनोखी हरकत देखें तुरन्त प्रबन्धकों को भी सावधान करें तथा स्वयं भी सावधान हो जाएँ।

जलसे के दिनों में कुछ विभागों ने अपनी नुमायश भी लगाई है जिसमें इतिहास का विभाग तथा आरकाईव ने भी व्यवस्था की हुई है। इसी प्रकार ''रिव्यू ऑफ़ रिलीजन्स'' ने भी क़ुरआन-ए-करीम के ग्रन्थों तथा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के कफ़न के सम्बंध में प्रदर्शनी का प्रबन्ध किया हुआ है, जिस प्रकार पिछले वर्ष किया था, इस वर्ष सम्भवतः उससे अच्छा हो। ये दोनों अपनी परिधि में बड़ी ज्ञान वर्धक नुमायशें हैं, पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए समय निश्चित किए गए हैं इनके द्वारा भी लाभ प्राप्त करने का प्रयास करें और फिर दोबारा मैं कहूँगा कि विशेष रूप से दुआओं की ओर ध्यान रक्खें और नमाज़ों तथा नफ़्लों के अतिरिक्त अल्लाह का ज़िक्र और दरूद शरीफ़ पढ़ने तथा दुआएँ करने में समय व्यतीत करें।

अल्लाह तआला इस जलसे को हर प्रकार से बरकत प्रदान करे तथा हम सबकी दुआएँ क़बूल फ़रमाए और प्रत्येक कठिनाई से हमें सुरक्षित रक्खे। आमीन